Vijay Kumar Sho
Asst Prof

The story of first cities

Degree Part I

(Harappan Archeology)

किसी भी प्रारम्भिक नगरों कि कहानी उसकी प्राचीन स्थिति के बिना संभव नहीं होता। उस सदर्भ में पुरातत्व एक प्रबल साधन के रूप में मौजूद है। पुरातत्व पुरा + तत्व शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ प्राचीन वस्तु होता है। जिस ऐतिहासिक तथ्य को पुरातत्व का समर्थन प्राप्त नहीं है उसे हम प्रमाणिक नहीं मान सकते। समकालीन प्रत्यक्षदर्शी सामग्री ही पुरातात्विक सामग्री कहलाता है। हमारा वही इतिहास प्रमाणिक है जो ऐसी सामग्री का आधार पर आश्रित है। इस सामग्री को इकट्ठा करने वाले पुरातत्वविद या पुरातत्व वेत्ता कहलाते है। पुरातत्व वह विज्ञान है जो पृथ्वी के गर्भ में छिपी हुई सामग्रियों को खोजकर अतीत के लोगों कि भौतिक जीवन का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसी पुरातात्विक सामग्री के आधार पर पुरातत्ववेत्ताओं ने हड़प्पा सभ्यता कि प्रारम्भिक नगरों कि कहानी का व्याख्यान किया है।

15 जनवरी 1784 ई० में William Jones ने कलकत्ता में Asiatic Society कि स्थापना कर भारतीय इतिहास जानने का पुरातात्विक अन्वेषण प्रारम्भ किया। 1861 ई० में भारत में पुरातत्व विभाग कि स्थापना हुई। 1872 में सम्पूर्ण भारत में पुरातत्व विषयक खोज करने का निर्णय लिया गया। 1902 ई० में सर जॉन मार्शल पुरातत्व विभाग के डाइरेक्टर जेनरल बने। इन्हीं के समय में राय बहादुर दयाराम साहनी ने उत्खनन द्वारा हड़प्पा स्थल को खोज किया। यहाँ उत्खनन से प्राप्त मोहरों के आधार पर जान मार्शल ने एक नवीन सभ्यता अर्थात सिंधु घाटी कि सभ्यता प्राप्त होने कि घोषणा कर दी।

1921 ई० में दयाराम साहनी पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के तट पर स्थित हड़प्पा नामक स्थल पर उत्खनन कर कई साक्ष्य प्राप्त किए। 1922 ई० में राखाल दास बनर्जी ने सिंधु के लरकाना जिले में मोहनजोदड़ो सभ्यता कि खोज की।

JANUARY 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

Scanned with Cam

उत्खनन कि प्रक्रिया अनवरत रहने के कारण सफ्ड के बाद एक कई नगरों के अवशेष प्राप्त होते हैं।
पिगट महोदय ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य कि जुड़वां राजधानी बताया है।

इड़प्पा सभ्यता कि विस्तार —

पुरातत्ववेत्ता रंगनाथ राव के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का विस्तार पूर्व से पश्चिम तक 1600 कि॰मी॰ एवं उत्तर से दक्षिण 1100 कि॰मी॰ यह सभ्यता त्रिभुजाकार आकार में फैली थी। उत्तर में जम्मू लखनूर से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी के तट तक तथा उत्तर पूर्व में नर्मदा नदी के तट तक फैला था। इस सभ्यता का क्षेत्र फल मिस्त्र से 20 गुना तथा मेसोपोटामिया से 12 गुना अधिक है।

इड़प्पा सभ्यता का काल)

विभिन्न विद्वानों में काल प्रसंग मे मत भिन्नता है। विभिन्न विद्वानों ने भिन्न मत प्रतिपादित किया है।

जान मार्शल — 3250 – 2750 ई॰ पू॰
अर्नेस्ट मैके — 2800 – 2500 ई॰ पू॰
राधा कुमुद मुखर्जी – 3200 – 2750 ई॰ पू॰
व्हीलर — 2500 – 1700 ई॰ पू॰
वी॰ ए॰ स्मिथ — 2500 – 1500 ई॰ पू॰
रेडीयो कार्बनविधि – C-14 2500 – 1750 ई॰ पू॰

उपर्युक्त विभिन्न मतों में C-14 कार्बन विधि एवं व्हीलर द्वारा प्रतिपादित मत 2500 – 1750 ई॰ पू॰ तर्कसंगत प्रतीत होता है।

इड़प्पा नगरों से प्राप्त वस्तुएं —

उत्खनन से विभिन्न शहरों के अवशेष प्राप्त हुये हैं वे निम्नवत हैं।

(1) मोहनजोदड़ो — शाब्दिक अर्थ होता है मृतकों का टीला। हरा-भरा होने के कारण इसे सिन्धु का बाग कहा जाता है। 1398 मुहरें, पुजारी का सर, मोम के सांचे कास्य कि नर्तकी, सूती कपड़े के अवशेष,

Scanned with Can

पानी का जहाज, शिलाजीत, गाड़ी के पहिए, दाढ़ी वाले मानव कि मुर्ति, हाथी दांत के तराजू, पशुपति कि मुद्रावस्था मुर्ति आदि प्राप्त हुये।

(2) हड़प्पा — यहाँ से स्त्रियों के मृणमुर्तियां, स्त्री की मुर्ति जिसके गर्भ से पौधा अंकुरण दिखाया गया है पत्थर के शिश्न और योनि प्रथापन मंजूषा, लकड़ी का हल, मुरलीहा, शंख का बैल, तांबे कि मुहर जौ, गेंहू, मटर और तिल के अवशेष आदि मिले है।

(3) चन्हुदड़ो :— अलंकृत हाथी, श्वान पीतल की बतख, लिपिस्टीक, तराजू एवं बैल गाड़ी प्राप्त हुये है।

(4) लोथल :— धान और बाजरे कि खेती का प्रमाण मिला है आटा पीसने वाली चक्की, हाथी दाँत का पैमाना, कुत्ते कि मुर्ति, बकरी की हड्डीयाँ, एवं बन्दरगाह का अवशेष मिला है।

(5) कालीबंगा :— अग्निकुंड, बेलनाकार मुहरें, नक्काशीदार ईंटे मस्तिष्क शोध के लिये कपाल, हल से जुते खेत एवं भू कम्प के प्राचीनतम प्रमाण मिले है।

(6) वनावली :— चक्राकार अंगूठिया नाक और कान की बालियाँ, मछली पकड़ने का कांटा एव मिट्टी के बने खिलौने मिले है।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख केन्द्र

जम्मू में अखनूर,
पंजाब में - रोपर (भारत)
पंजाब में हड़प्पा (पाकिस्तान)
गुजरात में रंगपुर लोथल, सुरकोतड़ा,
राजस्थान में कालीबंगा
उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर
बलुचिस्तान में डाबरकोट, सटकाकोह,
सिन्ध में - मोहनजोदारो, अलीमुराद
उपर्युक्त सभी स्थलों से प्रायः एक समान अन्तावशेष प्राप्त हुये है जिससे इस सभ्यता स्पष्ट फैलाव नजर आता है। — Shyam Kumar Jha

Assist Prof Deptt in History
M.S.J. College Rajnagar

Scanned with Can